18-8-68 ओम शान्तिः प्रातःक्लास

ड्रामा के प्लान अनुसार बाप बैठ समझाते है। बाप ही आकररावण की जेल से छुडाते है। क्योंकि सब क्रिमनल्स है। पापात्मा है नां। सारी दुनियां के मनुष्य मात्र क्रिमनल्स होने कारण रावण की जेल मे है। फिर जब शरीर छोडते है तो भी गंधे जेल मे ही जाते है। बाप आकर दोनो ही जेलो से छुडाते है। फिर तुम दोनो ही जेलो मे से किसी मे भी नही जावेंगे। आधा कल्पतुमको गंभ महल मिलता है तुम जानते हो कि इस रावण की जेल से धीरे-2 पुरुषार्थ अनुसारबाप छुडाते रहते है। बाप बताते है तुम सब क्रिमनल्स हो। रावण राज्य में। फिर राम राज्य मे तो सब सिवलियन्स होते है। कोई भीभूत की प्रवेशता नही होती। देह-का अंहकार आने से ही फिर और भी भूतो की प्रवेशता होती है। अब तुम बच्चे को पुरुषार्थ कर देहीअभिमनी बनना है। जब ऐसे ल- न बन जावेंगे तो ही देवता कहलावेंगे। अब तो तुम ब्राहमण कहलाते हो। रावण की जेल से छुडाने लिये बाप आकर पढ़ाते है। और जो सबके कैरेक्टर्स बिगडे हुये है उनको भी सुधारते है। आधा कल्प से कैरेक्टर्स बिगडते-2 बहुत बिगड गया है। इस समय है तमोप्रधान कैरेक्टर्स। दैवी और आसुरी कैरेक्टर्स मे बराबर रात-दिन का फर्क है। बाप समझाते है अभी भी पुरुषार्थ कर अपना कैरेक्टर दैवी बनाओ। तभी ही आसुरी कैरेक्टर्स छू छूटते जावेंगे। आसुरी कैरेक्टर्स देह अभिमन है नम्बरवन। देही-अभिमनी का कैरेक्टर कब बिगडता ही नही है आधा कल्प। सारा मदार कैरेक्टर्स पर ही है। देवताओं का कैरेक्ट कैसे बिगडता है जब कि वाम मार्ग मे जाते है। अर्थात विकारी बनते है। जगन्नाथ के मन्दिर मे ऐसे चित्र दिखाते है। वाम मार्ग के। बाबा ने कहा था जांच करके समाचार दो कि अब तक वो चित्र है वां सरकार ने बन्दद करवा दिये है। यह तो बहुत सालो का पु न्दिर है। ड्रेस आद तो देवताओं की ही है। दिखाते है कि देवतोय वाम मार्ग मे कैसे गये। पहले-2क्रिमनल्टी है ही नहीं। काम चिक्षा पर चढ़ते है तो फिर रंग बदलता-2 काला हो जाता है। फट से काले नही होते है। पहले गोल्डन ऐज से सिल्वर ऐज मे फिर सिल्वर से कापर मे फिर आयरन मे आते है। गोल्डन ऐज मे तो है ही सम्पूर्ण गौर फिर दो कलोय कम हो जाती है। त्रेता को स्वर्ग नही कहेंगे। वो हैसेभी स्वर्ग? बाप ने समझाया है कि रावण के आने से ही हमोर पर कट चढ़ी है। पूरे क्रिमनल बने है। 100%क्रिमनल कहेंगे। 100% वाईसलेस थे अब 100%विशयष बने है। अभी बाप कहते है सुधरते जाओ। यह रावण की जेल बहुत बडी है। अब माताये लैक्चर करती थीपरन्तु उन सबको तो क्रिमनल ही कहेंगे नां। क्योंकि रावण राज्य मे है नां। रामराज्य और रावण राज्य का तो उनको पता ही नही है। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो राम राज्य मे जाने। सम्पूर्ण तो कोई भी बना नही है। कोई फर्स्ट कोई सैकिण्ड कोई थर्ड ग्रेट मे है। अब बाप पढाते है दैवी गुण धारन करवाते है। देहअभिमन तो सबमे है ही। तुम सर्विस में लगे रहोगे तो उतना ही देह-अभिमन कम हो जावेगा। देहीअभिमानी बहुत ही अच्छी सर्विस करेंगे। बाप देहीअभिमानी है तो कितनी अच्छी सर्विस करते है। सब क्रिमनल्स को रावण की जेल से छुडा कर राम राज्य मे ले जाते है। वहां पर तो फिर कोई भी जेल नहीहोती है। यहां पर तो डबल जेल है। सतयुग मे नां तो कोर्ट। नां ही पापात्मोय नां ही रावण की जेल ही होती है। रावण की तो है बेहद की जेल। पांचं विकारो मे तो फंसे हुये जरूर दुःखी ही होगे नां। दिन प्रति दिन दुःख वृधी को ही पाता रहता है। सतयुग को कहा ही जाता है गोल्डन ऐज। सतयुग वाला सुख तो त्रेता मे नही हो सकता है। क्योंकि आत्मा की प्योरटी की दो कलोयं कम हो जाती है। आत्मा की कलायें कम होने से फिर शरीर भी ऐसा ही हो जाता है। तो यही समझाना चाहिये कि बराबर हम तो रावण के राज्य मे देहअभिमनी हो गये है। अब बाबा आया है रावण की जेल से छुडाने के लिये। आधा कल्प का देहअभिमान निकालने मे मेहनत लगती है। जल्दी मे जो शरीर छोड कर गये वो तो फिर भी कुछ ज्ञान उठा सकें। जितनी देरी होती जाती है तो पुरुषार्थ तो फिर कर ही नही सकेंगे। कोई मरे और फिर पुरुषार्थ करे वो तो तब होगा जबकि आर्गन्स बडे होगे। तो कुछ भी समझ सके। देरी से जाने वाले तो कुछ भी सीख नही सकेंगे। जितना सीखे उतना तो सीखे। इसलिये ही मरने से पहले ही पुरुषार्थ कर लेना चाहिये। जितना हो सके। उस तरफ आने की

कोशिश जरूर करेंगे। इस हालत मे बहुत आवेंगे। झाड़ वृधी को पावेगा। समझानी तो बहुत सहज है। बाम्बे में बच्चो को यह चांस बहुत अच्छा था। बडी मुक्ति से ल-न का चित्र रेम, आ: भी साथ मे ले गये थे। और पढाने वाले शिव बाबा का चित्र भी ले गये थे। चांस बहुत अच्छा था बाप का परिचय देने का। यह हम सबका बाप है। बाप से वर्सा तो जरूर स्वर्ग का ही मिलना चाहिये। कितना सहज है। हमने अपने बाप को लाया है। यह हमारी रेम आ: है। दिल अन्दर मे तो पुलकायमान होनी चाहिये। यह हमारा पढ़ाने वाला है और यह है रेमआ: हम तो पहले-2 सदगति मे थे फिर दुगति मे आये है। अब फिर दुर्गति से सदगति मे जाना है। बाप कहते है कि तुम बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्मजन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। वो लोग तो भल गुरु करते है परन्तु यह कोई को भी पता नही है कि हम जन्म ज: के पापी है। समझते है कि इस जन्म के पापों के दग्ध होने का रास्ता मिलेगा। परन्तु वो गुरु लोग तो पाप दग्ध होने का रास्ता तो बताते ही नही है। वो तो और ही डूबोने का रास्ता बताते है। कह देते है कि शिव बाबा तो सर्वव्यापी है। लौकिक बाप टीचर भी इतना नही गिराते है जितना कि शास्त्र पढ़ाने वाले गुरु लोग। बता देना चाहिये। भगवान कहते है कि मैने तो कभी भी कहा ही नही है कि मै सर्वव्यापी हूं। जब दवापुर मे रावण का राज्य शुरु होता है तो पांच विकारो रुपी रावण सबमें आ जाता है। जहां पर पांचपांच विकार ही सर्वव्यापी है वहां पर फिर मै कैसेहोऊंगा। पापात्मायें है नां। मैने तो कभी नही कहा है कि मै सर्वव्यापी हूं। तो जरूर समझेंगे कि बाप सम्मुख है तब तो कहते है नांकि मैने तो कहा ही नही है। उल्टा ही समझ गये है। उल्टा समझते-2 विकारो मे गिरते-2 गालियां देते-2 भारत का यह हाल हो गया है। कृश्चन्स लोग भी जानते है कि 5000वर्ष पहले पैराडाईज थाटसतोप्रधान थे। भारतवासी तो लाखो ही वर्ष कह देते है। क्योंकि तमोप्रधान बुधी बन गये है। वो तो फिर भी नां इतना ऊंच बने है नां ही इतना नीच बने है। तो ही वो समझते है कि बेशक स्वर्ग था। बाप कहते है कि वो ठीक कहते है। 5000साल पहले भी रावण की जेल से छुडाने आया था अब फिर से आया हूं छुडाने। आधा कल्प है राम राज्य, आधा कल्प है रावण का राज्य। बच्चो को चांस मिलता है तो बाबा भी कहते है समझते हैकि ऐसे-2 बताओ। इतना अपरमअपार दुःख क्यो हुआ है। आजसे 5000वर्ष पहले तो भारत मे ही अपरमअपार सुख था। जब इन ल-न का राज्य था। अब यह नालेज तो है ही नर से नारायण बनाने की। पढ़ाई है इनसे देवी कैरेक्टर्स बनाते है। रावण के जेल मे तो सभी के ही कैरेक्टर्स बिगडे हुये है। छुडाने वाला तो एक ही राम है। बिगडे हुये कैरेक्टर वाले किसी को कैसे छुडावेंगे। जबकि है ही रावण का राज्य। अनेक-अनेक राजाये है कितने ही धर्म है। ऐसे ही वृधी होती रहेगी। फिर खाना भी कैसे खा सकेंगे। इतने बच्चे पैदा करना यह तो बिच्छुआनी का काम है। पेट चीर कर बच्चे निकाले जाते है। सतयुग मे तो ऐसी बात होती ह नही है। वहां दुःख की कोई बात ही नही। यह कलयुग है दुःखधाम। वो है सुखधाम। सभी सम्पूर्ण निरविकारी है। बार-2 उनको यही बताना चाहिये। तो कुछ समझ भी जावें। बाप कहते है कि मै पतित पावन हूं। मुझे ही याद करने से तुम्हारे जन्म ज: के पाप कट जावेंगे। अब बाप कैसे कहेंगे? जरूर शरीर धारन करके ही तो बोलेंगे नां। शरीर के बिना भल भला आत्मा कैसे बोलेगी। पतित पावन सब का सदगति दाता है तो जरूर रथ लेगा नां। कहते है कि मै तो उस रथ मे आता हूं जो कि अपने ही जन्मो को नही जानते है। बाप समझाते है कि यह 84जन्मो का खेल है। मैक्सीमम 84 मिनीमम एक ही होता है। जो पहले आये होंगे वो ही आयेंगे। उनके बहुत जन्म होगें फिर कम होते जावेंगे। सबसे पहले तो देवतायें ही आये थे। बाबा बच्चो को भाषण करना सिखाते है कि ऐसे-2 समझाना चाहिये। अच्छी रीती याद मे रहेंगे, देहअहंकार नही होगा तो ही तो भाषण भी कर सकेंगे। शिव बाबा देही-अभिमानी है नां। कहते भी रहते है बच्चो देही-अभिमानी बनो। कोईविकार नही रहे। कोई शैतानी नही। किसीको भी दुःख नही देना है। बाप कहते है कि जिन्होंने शास्त्र बनाये उन जैसा टेटर तो और कोई हो नही सकता बाप को सर्वव्यापी किसने कहा? व्यास ने जिसने की गीता बनाई है। बातें बनाने वाले तो ऐसे बहुत होते है। मनुष्य मत पर चलते हुये दुःखी ही होते रहेंगे। बात मे कुछ भी नही होगा तो भी बातें बनाकर किसीकोखा

खराब करतेरहेंगे। यह समझने की बाते है। शास्त्रो मे भी ऐसी-2 बाते लिख दी है। जो पढ़ते-2 शिव बाबा के साथ ट्रेटर बन गये है। कितनी निन्दा की है। तुम बच्चे को भी कब भी सुनी सुनाई बात पर विश्वास नही करना चाहिये। बाप से पूछो कि यह ऐसे कहते है यह सत्य है? बाप बता देंगे। नही तो बहुत ही झूठी बाते बनाने मे देरी नही करते है। फलानी ने तुम्हारे लिये ऐसे-2 कहा है कह कर ही खराब कर देंगे। व्यास की झूठी-2 बाते सुन कर मनुष्यखाक हो पडे है। बाबा जानते है कि ऐसे तो बहुत ही होता है। उल्टी-सुल्टी बाते सुना कर दिल को खराब कर देते है। इसलिये ही कब भी झूठी बाते सुन कर अन्दर मे जलना नही चाहिये। पूछो फलानी तुमने मेरे लिये ऐसे कहा है? सफाई हो जानी चाहिये। सुनी सुनाई बातो पर भी दुश्मनी रख लेते है। बाप मिला है तो बाप से पूछना चाहिये नां। ब्रह्मा बाबा पर भी बहुतो का विश्वास नही रहता है शिव बाबा को भी भूल जाते है। ऐसी दुर्दशा तो नही कर लेनी चाहिये। दुर्दशा तो आगे ही हुई पडी है। वोफिर वहां पर जाकर बनेगे? एक दो की बाते सुनकर नुकसान करना तो ट्रेटर का ही काम है यह धन्धा करना। सर्विसबुल बच्चे तो सदैव सर्विस मे ही लगे रहेंगे। बाबा के पास समाचार तो आते ही है नां। धूंतियां ही ऐसे ऐसे खराब काम करती है। झूठी बाते बना कर औरो की भी दिल खराब कर देती है। बाप तो ओय ही है सबको ऊंचा बनाने। प्यार से उठाते रहते है। ईर्षा मत लेनी चाहिये। बाप से पूछे तो जवाब ठीक ही मिलेगा। निश्चय ही नही होगा पूछेगे ही नही तो जवाब फिर कैसे मिलेगा? बाप जो समझाते है उसको धारन करना चाहिये। विश्व मे शान्तिः स्थापन करने के तुम निमत बने हो श्रीमत पर। और कोई की तो ऊंच से ऊंच मत है ही नही। ऊंच ते ऊंच भगवान की ही ऊंच ते ऊंच मत है। मतवा भी तो कितना ऊंचा है। बाप तो ऊंच ते ऊंच बनाते है कहते है कि अपना ही कल्याण कर ऊंच पद पाओ। महारथी बनो। पढ़ोगे ही नही तो क्या पद पाओगे। यह तो है जन्मजन्मान्तर कल्पकल्पान्तर की बात। दास-दासियां भी तो नम्बरवार होती है नां? बाप तो ओय ही है ऊंच बनाने। परन्तु पढ़ते ही नही है तो क्या पद पावेंगे। प्रजा मे भी ऊंच नीच पद तो है नां। यह बुधी से समझना है। एकदम भैंस बुधी नही बनना है। इस समय तो सारी ही दुनियां भैंस बुधी है। इनको कुछ भी पता नही पड़ता है कि हम कहां पर जाते है। ऊंपर जाते है वां नीचे ही उतरते जाते है। भैंस बुधियों को तो कुछ भी पता ही नही पड़ता है। बाप आकर समझाते है कि अन्धों तुम तो नीचे ही उतरते जाते हो। घमण्ड कितना है। परन्तु भैंस बुधियों तुम तो नीचे ही उतरते जाते हो। भैंस बुधी अर्थात जनावर। जंगली जनावर होते है नां। मनुष्य का भी मास खा लेते है। आगे तो काली पर मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे। जितना ही छोटे बच्चे की बलि होगी उतनी ही स्वादी होगी। छोटे बकरे का भी मास नर्म होता है नां। आगे छोटे बच्चो की ही बलि चढ़ाते थे। वो ही फिर महाप्रसाद समझ कर बांटते थे। आदमखोर मनुष्य ठहरे नां। बाबा बैठ समझाते है कि तुम तो आदमखोर बन मुझे बन गये हो। यह तो बाद मे सरकार ने आकर बन्द किया है। बाप कहते है कि कहां पर तो तुम गोल्डन ऐज ऊंच से थे कहां पर आकर आयरनऐज नीच बने हो। मनुष्य मनुष्यों को ही खाजाते है आयरन ऐज मे पता ही नही पड़ता है। यह सब बाते जब समझे तो ही समझे कि ज्ञान किसको कहा जाता है। 100% भैंस बुधी है। एक कान से सुना दूसरे से निकाला। अच्छे-2 सेन्टर्स के बच्चो की भी क्रिमनलआये रहती है। नफा नुकसान इज्जत की प्रवाह थोडेई ही रखते है। मूल बात तो है ही क्रिमनलआय की। बाप कहते है कि काम महाशत्रु है इनको ही जीतने के लिये कितना माथा मारना पड़ता है। मूल बात तो है ही पवित्रता की। इस पर ही कितने झगडे होते है। बाप कहते है कि यह काम महाशत्रु है। इस पर ही जीत प्राप्त करके जगतजीत बनो। देवतोय सर्म्पूण निर्विकारी है नां। आगे चल कर तो समझ ही जावेंगे। स्थापना भी हो ही जावेगी। अच्छा मात-पिता बापदादा तथा मधुवन निवासियों आत्मिक सब भाईयों की दिल वा जान सिक वा प्रेम भरी बच्चो को याद प्यार और गुडमोर्निगऔर रूहानी बच्चो को नमस्ते